http://www.mjpruonline.com

Paper Code : 11103

225

B. A. (Part I) EXAMINATION, 2017

(Three-year Degree Course)

(New Course)

HINDI LITERATURE

Paper First

(प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य)

Time : Three Hours] [*Maximum Marks : 50*

नोट : निर्देशानुसार सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—क

1. निम्नलिखित काव्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : प्रत्येक 4

(i) दीपक दीया तेल भरि, बाती दई अघट्ट।
पूरा किया बिसाहुँणा, बहुरि न आवौं हट्ट॥
ग्यान प्रकास्या गुर मिल्या, सो जिनि बीसरि जाइ।
जब गोविन्द किरपा करी, तब गुरु मिलिया आइ॥

http://www.mjpruonline.com

अथवा

सखि एक तेइ खेल न जाना। भै अचेत मनि-हार गँवाना॥
कवँल डार गहि भै बेकरारा। कासौं पुकारौं आपन हारा॥
कित खेलै आइउँ एहि साथा। हार गँवाह चलिउँ लेइ हाथा॥
घर पैठत पूँछब एहि हारू। कौन उतर पाउब पैसारू॥
नैन सीप आँसू तस भरे। जानौं मोति गिरहि सब ढरे॥
सखिन्ह कहा बौरी कोकिला। कौन पानि जेहि पौनु न मिला॥
हार गँवाह सो ऐसै रोवा। हेरि हेराइ लेहु जौं खोवा॥
लागीं सब मिलि हेरैं, बूढ़ि-बूढ़ि एक साथ।
कोइ उठी मोती लेइ, काहू घोंघा हाथ॥

(ii) मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै।
जैसे उड़ि जहाज को पंछी, फिरि जहाज पर आवै
कमल-नैन को छाड़ि महातम और देव को ध्यावै।
परम गंग को छाड़ि पियासौ, दुरमति कूप खनावै॥
जिहिं मधुकर अंबुज-रस चाख्यौ क्यों करील-फल भावै
सूरदास प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै॥

अथवा

कीर के कागर ज्यों नृपचीर, विभूषन उप्पम अंगनि पाई।
औध तजी मगवास के रूख ज्यौं, पंथ के साथी ज्यौं लोग लुगाई।
संग सुबन्धु, पुनीत प्रिया, मनो धर्मु क्रिया धरि देह सुहाई।
राजिवलोचन रामु चले तजि बाप को राजु बटाउँ की नाई॥

http://www.mjpruonline.com

http://www.mjpruonline.com

(iii) या अनुरागी चित्त की गति समझै नहिं कोई।
ज्यौं ज्यों बूढ़े स्यामरंग, त्यौं त्यौं उज्ज्वल होइ।
मैं समझ्यौ निरधार, यह जग काँचौ काँच सौ।
एकैं रूप अपार प्रतिबिंबित लखियत जहाँ॥

अथवा

पहिले अपनाय सुजान सनेह सों, क्यों फिरि नेह कै तोरियै जू
निरधार आधार दै धार-मझार, दई, गहि बाँह न बोरियै जू
घनआनन्द अपने चातिक को, गुन बाँधि कै, मोह न छोरियै जू।
रस प्याय के ज्याय, बढ़ाय कै आस, बिसास मैं यों बिस धोरिये जू॥

(iv) ऊँचे घोर मँदर के अंदर रहनवारी ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहाती है।
कंदमूल भोग करैं कंदमूल भोग करैं तीन बेर खातीं ते वे तीन बेर खाती हैं।
भूषण सिथिल अंग भूषन सिथिल अंग बिजन डुलाती ते वै जिन डुलाती हैं।
भूषन भनत सिवराज वीर तेरे त्रास नगन जड़ाती ते वै नगन जड़ाती हैं।

अथवा

अंग अंग नग जगमगात दीप शिखा सी देह।
दिवा बढ़ाय हूँ रहै बड़ौं उज्यारौं नेह
अनियारे, दीरघ दृगनु किती न तरुनि समान।
वह चितवन औरू कछू, जिहि बस होत सुजान॥

P. T. O.
http://www.mjpruonline.com

खण्ड—ख

2. अधोलिखित प्रश्नों के विस्तृत उत्तर दीजिए : प्रत्येक 7

(क) 'कबीर का उद्देश्य कविता न होकर समाज में व्याप्त अंधकार को मिटाना ही था।' सिद्ध कीजिए।

अथवा

'जायसी का वियोग वर्णन हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है।' इस कथन की समीक्षा कीजिए।

अथवा

सूर की भक्ति भावना पर प्रकाश डालिए।

अथवा

तुलसी के कला पक्ष पर विचार प्रस्तुत कीजिए।

(ख) "बिहारी रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि हैं।" इस उक्ति की सतर्क विवेचना कीजिए।

अथवा

'भूषण वीर रस के श्रेष्ठ कवि हैं।' इस कथन पर प्रकाश डालिए। http://www.mjpruonline.com

अथवा

रीतिकाल की स्वच्छन्द धारा में घनानंद का स्थान निर्धारित कीजिए।

खण्ड—ग

3. निम्नलिखित सभी प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए : प्रत्येक 2

(क) 'चन्द्रबरदाई' कृत 'रासो' की काव्यभाषा पर प्रकाश डालिए।

http://www.mjpruonline.com

http://www.mjpruonline.com

(ख) सरहपा की साधना पद्धति की मुख्य उद्देश्य निरूपित कीजिए।

(ग) अब्दुर्रहमान के 'संदेशरासक' के भाव पक्ष पर प्रकाश डालिए।

(घ) हिन्दी साहित्य में 'अमीर खुसरो' की भूमिका पर प्रकाश डालिए।

(ङ) सिद्धों के सहज योग पर प्रकाश डालिए।

4. उचित विकल्प का चयन कर निम्नलिखित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए: प्रत्येक 1

(क) कबीर का मृत्युस्थान है :

(i) मगहर

(ii) जगन्नाथपुरी

(iii) अवध

(iv) काशी

(ख) जायसी की प्रसिद्धि का मूलाधार है :

(i) चित्ररेखा

(ii) अखरावट

(iii) आखिरी कलाम

(iv) पद्मावत

(ग) सूरदास के गुरु का नाम है :

(i) विट्ठलनाथ

http://www.mjpruonline.com

http://www.mjpruonline.com

(ii) आचार्य बल्लभ

(iii) गोपीनाथ

(iv) हरिदास

(घ) 'रामचरितमानस' की भाषा है :

(i) ब्रज

(ii) अवधी

(iii) खड़ी बोली

(iv) ब्रज मिश्रित खड़ी बोली

(ङ) भूषण रीतिकाल के किस रस के कवि हैं ?

(i) शान्त रस

(ii) वीभत्स रस

(iii) शृंगार रस

(iv) वीर रस

(च) बिहारी के आश्रयदाता राजा का नाम है :

(i) मुहम्मद शाला रंगीला

(ii) राजा जयसिंह

(iii) राजा प्रतापसिंह

(iv) नरेश हिन्दूपति सिंह

(छ) हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग माना जाता है :

(i) आदिकाल

(ii) भक्तिकाल

(iii) रीतिकाल

(iv) आधुनिक काल

http://www.mjpruonline.com

http://www.mjpruonline.com

(ज) निम्नलिखित में से कौन सा ग्रंथ घनानन्द कवि का नहीं है ?

(i) प्रेम सरोवर

(ii) सुजान सागर

(iii) सुजान हित

(iv) वृक्ष विलास

(झ) निम्नलिखित में कौन से कवि भक्तिकाल के नहीं हैं ?

(i) सूरदास

(ii) तुलसीदास

(iii) कबीरदास

(iv) देव

(ञ) "गाइए गणपति जग बन्दन। संकर सुवन भवानी-नन्दन।" उक्त पंक्तियाँ किस कवि की हैं ?

(i) केशव

(ii) बिहारी

(iii) तुलसीदास

(iv) सूरदास

http://www.mjpruonline.com
Whatsapp @ 9300930012
Your old paper & get 10/-
पुराने पेपर्स भेजे और 10 रुपये पायें,
Paytm or Google Pay से

http://www.mjpruonline.com

http://www.mjpruonline.com
http://www.mjpruonline.com